01-02-2022

नेशनल शुगर इंस्टिट्यूट सुजालकेम टेक्नोलॉजी रिसर्च वर्क मिलकर करेंगे

▸ दोनों संस्थान दी है बी हैवी शीरे के भंडारण पर होने वाली चीनी की हानि पर रिसर्च करेंगे

श्रीटीएनएन

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर एवं मे सुजालकेम टेक्नोलॉजीज प्रा लि, हैदराबाद के मध्य आज एक अनुसन्धान समझौते पर हस्ताक्षर किये गए। समझौते के अनुसार दोनों संस्थाएं बी हैवी शीरे के भण्डारण पर होने वाली चीनी की हानि को रोकने के लिए विशिष्ट एंजाइम के विकास एवं उसके इंडस्ट्री मे उपयोग पर मिलकर कार्य करेंगे।

इथेनॉल की उत्पादकता बढ़ेगी

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने बताया की देश मे इथेनॉल ब्लेंडिंग के 20% के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न फीड स्टॉक को चिन्हित किया गया है जिसमे चीनी मिलों से प्राप्त बी हैवी शीरा भी है। पारम्परिक सी शीरे की तुलना मे बी हैवी शीरे मे चीनी की मात्रा अधिक होती है एवं जहाँ प्रति टन सी शीरे से लगभग 225-235 लीटर इथेनॉल प्राप्त होता है वहीँ बी हैवी शीरे से ये मात्रा 300-340 लीटर होती है। अधिक चीनी होने के कारण बी हैवी शीरे को टैंको मे रखने पर सी शीरे की अपेक्षा बी हैवी शीरे मे बैक्टीरिया एवं अन्य रासायनिक प्रक्रियाओं के कारण चीनी की हानि अधिक तेजी से होती है जिसके कारण इथेनॉल की उत्पादकता पर प्रभाव पड़ता है। अतः हमारा लक्ष्य एंजाइम एवं बायो-साइड के ब्लेंड द्वारा इस हानि को रोकना है। ऐसा करके इथेनॉल की उत्पादकता बढ़ायी जा सकती है।

संस्थान में एंजाइम की टेस्टिंग की जाएगी

समझौते की अनुसार मे सुजालकेम द्वारा विकसित एंजाइम का संस्थान मे शुगर टेक्नोलॉजी अनुभाग मे प्रयोगशाला स्तर पर एक वर्ष तक परिक्षण किया जायेगा। शुगर टेक्नोलॉजी विभाग के सहायक आचार्य श्री अशोक गर्ग ने बताया की इस कार्य हेतु संस्थान द्वारा उसी प्रकार के छोटे स्टील टैंकों का निर्माण कराया गया है जैसे की चीनी मिलों मे प्रयोग होते हैं। मे सुजालकेम के रीजनल मार्केटिंग हेड, ईश्वर गोरेवारा ने बताया की उनकी कंपनी इस अनुसन्धान कार्य हेतु संस्थान मे रिसर्च फेलो भी उपलब्ध कराएगी।

लगाने का लक्ष्य दिया था, जो कि पूरा हो गया। वहीं निर्धारित लक्ष्य के अनुसार 75 प्रतिशत वयस्कों को दोनों 1.40 करोड़ किशोरों को वैक्सीन लगाई जानी है। अब तक 95.06 लाख किशोर वैक्सीन की पहली डोज लगवा

मुख्यमंत्री ने दी बधाई -प्रदेश में सभी वयस्कों को पहली डोज लग जाने पर सीएम योगी आदित्यनाथ ने बधाई दी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन और स्वास्थ्य कर्मियों की मेहनत के कारण ये लक्ष्य प्राप्त करना संभव हुआ है। कोरोना के विरुद्ध इस युद्ध को हम सभी मिलकर अवश्य जीतेंगे।

चीनी क़ी हानि को रोकने के लिए विशिष्ट एंजाइम का विकास किया जायेगा

कानपुर (नगर छाया समाचार)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर एवं मे सुजालकेम टेक्नोलॉजीज प्रा लि, हैदराबाद के मध्य आज एक अनुसन्धान समझौते पर हस्ताक्षर किये गए। समझौते के अनुसार दोनों संस्थाएं बी हैवी शीरे के भण्डारण पर होने वाली चीनी क़ी हानि को रोकने के लिए विशिष्ट एंजाइम के विकास एवं उसके इंडस्ट्री मे उपयोग पर मिलकर कार्य करेंगे।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने बताया क़ी देश मे इथेनॉल ब्लेंडिंग के 20% के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न फीड स्टॉक को चिन्हित किया गया है जिसमे चीनी मिलों से प्राप्त बी हैवी शीरा भी है। पारम्परिक सी शीरे क़ी तुलना मे बी हैवी शीरे मे चीनी क़ी मात्रा अधिक होती है एवं जहाँ प्रति टन सी शीरे से लगभग 225-235 लीटर इथेनॉल प्राप्त होता है वहीँ बी हैवी शीरे से ये मात्रा 300-340 लीटर होती है। अधिक चीनी होने के कारण बी हैवी शीरे को टैंको मे रखने पर सी शीरे क़ी अपेक्षा बी हैवी शीरे मे बैक्टीरिया एवं अन्य रासायनिक प्रक्रियाओं के कारण चीनी क़ी हानि अधिक तेजी से होती है जिसके कारण इथेनॉल क़ी उत्पादकता पर प्रभाव पड़ता है। अतः हमारा लक्ष्य एंजाइम एवं बायो-साइड के ब्लेंड द्वारा इस हानि को रोकना है। ऐसा करके इथेनॉल क़ी उत्पादकता बढ़ायी जा सकती है।

समझौते की अनुसार मे सुजालकेम द्वारा विकसित एंजाइम का संस्थान मे शुगर टेक्नोलॉजी अनुभाग मे प्रयोगशाला स्तर पर एक वर्ष तक परिक्षण किया जायेगा। शुगर टेक्नोलॉजी विभाग के सहायक आचार्य श्री अशोक गर्ग ने बताया क़ी इस कार्य हेतु संस्थान द्वारा उसी प्रकार के छोटे स्टील टैंकों का निर्माण कराया गया है जैसे क़ी चीनी मिलों मे प्रयोग होते हैं। मे सुजालकेम के रीजनल मार्केटिंग हेड, श्री ईश्वर गोरेवारा ने बताया क़ी उनकी कंपनी इस अनुसन्धान कार्य हेतु संस्थान मे रिसर्च फेलो भी उपलब्ध कराएगी।

शर्करा संस्थान ने हैदराबाद की कंपनी के साथ किया अनुसंधान समझौता

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर एवं मे.सुजालकम टेक्नोलॉजीज प्रा.लि., हैदराबाद के मध्य सोमवार को एक अनुसंधान समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। समझौते के अनुसार दोनों संस्थाएं बी हैवी शीरे के भंडारण पर होने वाली चीनी की हानि को रोकने के लिए विशिष्ट एंजाइम के विकास एवं उसके इंडस्ट्री में उपयोग पर मिलकर कार्य करेंगे। निदेशक शर्करा संस्थान प्रो.नरेन्द्र मोहन ने बताया कि देश में एथनॉल के ब्लेंडिंग के 20 प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न फीड स्टॉक को चिह्नित किया गया है, जिसमें चीनी मिलों से प्राप्त बी हैवी शीरा भी है। पारंपरिक सी शीरे की तुलना में बी हैवी शीरे में चीनी की मात्रा अधिक होती है। जहां प्रति टन सी शीरे से लगभग 225-235 लीटर एथनॉल प्राप्त होता है, वहीं बी हैवी शीरे से 300-340 लीटर तक एथनॉल प्राप्त होता है। अधिक चीनी होने के कारण बी हैवी शीरे को टैंकों में रखने पर सी शीरे की अपेक्षा बी हैवी शीरे में बैक्टीरिया एवं अन्य रासायनिक प्रक्रियाओं के कारण चीनी की हानि अधिक तेजी से होती है। इसका प्रभाव एथनॉल की उत्पादकता पर पड़ता है। हमारा लक्ष्य एंजाइम एवं बॉयो साइड के ब्लेंड द्वारा इस हानि को रोकना है। ऐसा करके एथनॉल की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। समझौते के अनुसार सुजालकेम द्वारा विकसित एंजाइम का संस्थान के शुगर टेक्नोलॉजी अनुभाग में प्रयोगशाला स्तर पर एक वर्ष तक परीक्षण किया जायेगा। सहायक आचार्य अशोक गर्ग ने बताया कि इस कार्य हेतु संस्थान द्वारा चीनी मिलों की तरह छोटे स्टिल टैंकों का निर्माण कराया गया है। सुजालकेम के रीजनल मार्केटिंग हेड ईश्वर गोरेवारा ने बताया कि उनकी कंपनी इस अनुसंधान कार्य हेतु संस्थान में रिसर्च फेलो भी उपलब्ध करायेगी।

शर्करा संस्थान ने हैदराबाद की कंपनी के साथ किये अनुसंधान समझौते। फोटो : एसएनबी

चीनी की हानि रोकने को विशेष एंजाइम बनाएंगे

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट और हैदराबाद की सुजालकेम टेक्नोलॉजीज के बीच सोमवार को समझौता हुआ है। दोनों संस्थान गन्ने के बी हैवी शीरे के भंडारण पर होने वाली चीनी की हानि को रोकने के लिए विशेष एंजाइम के विकास पर कार्य करेंगे। इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण के 20% लक्ष्य को पूरा करने के लिए विभिन्न फीड स्टॉक को चिह्नित किया गया है। इसमें चीनी मिलों से प्राप्त होने वाला बी हैवी शीरा भी शामिल है। प्रति टन बी हैवी शीरे से चार सौ लीटर तक इथेनॉल प्राप्त होता है। शीरे में बैक्टीरिया के कारण चीनी की अधिक हानि होती है। समझौते के अनुसार इंस्टीट्यूट की प्रयोगशाला में एक साल तक परीक्षण किया जाएगा। मंगलवार से इंस्टीट्यूट की प्रायोगिक चीनी मिल का पेराई सत्र शुरू हो जाएगा। (ब्यूरो)